UGC Journal No. (Old) 40942,
Impact Factor 3.928, ISSN 0973-3914
Vol.- XXIX, Hindi, Part-II, Year-14, Sept., 2019

दक्षेस : स्थापना के लक्ष्य एवं वर्तमान दशा

• बलबीर सिंह

सारांश– दक्षिण एशिया क्षेत्र में दक्षेस की स्थापना क्षेत्रीय सहयोग की धारणा के अनुरूप की गई थी। इस दिशा में दक्षेस द्वारा कुछ सकारात्मक प्रयास भी किये गये एवं क्षेत्र के आर्थिक विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा देने की नीति भी अपनायी गई। अन्य देशों विशेषकर महाशक्तियों के हस्तक्षेप के कारण दक्षेस के सदस्य देशों में एकजुटता एवं पारस्परिक सहयोग की स्थापना होने के स्थान पर पारस्परिक अविश्वास, बिखराव एवं वैचारिक मतभेद की प्रवृत्ति बलवती हुई। इस प्रवृत्ति के कारण क्षेत्र में सहयोग के स्थान पर दक्षेस आपसी विवादों का मंच एवं अखाड़ा बनने की ओर अग्रसर हो गया। यह प्रवृत्ति आज भी कायम है। संगठन की सफलता एवं एकजुटता के लिए सदस्य देशों में सहयोग, समन्वय एवं आपसी प्रगाढ़ता की आवश्यकता अतिविशिष्ट मानी जा सकती है। दक्षेस की दशा एवं दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाने में भारत द्वारा बिग ब्रदर्स की भूमिका का निर्वाह करने तथा अन्य राष्ट्रों द्वारा आपसी सहयोग हेतु पाकिस्तान के प्रति दबाव की नीति अपनाने का प्रयास सहायक कदम सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द– सहयोग, दक्षिण एशिया, वैचारिक मतभेद

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शांति, सुरक्षा, सामरिक स्थिति एवं संसाधनों की दृष्टि से दक्षिण एशिया विश्व-राजनीति का केन्द्र बिन्दु माना जाता है। विश्व की लगभग एक-चौथाई आबादी को अपने भू-भाग पर समाहित किया हुआ यह भू-भाग प्राचीन समरसता एवं विरासत का क्षेत्र रहा है। विश्व राजनीति में क्षेत्रीय आधार पर अनेक देशों के मध्य आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए कई क्षेत्रीय सहयोग संगठन उभरकर आये हैं, जिनमें यूरोपीय संघ (E.U.), आसियान (ASEAN), दक्षेस (SAARC), ओपेक (OPEC), हिमतक्षेस (IORARC) आदि का नाम लिया जा सकता है। दक्षिण एशिया में दक्षेस की स्थापना आपसी सहयोग का महत्त्वपूर्ण आधार संगठन माना जाता है। वर्तमान समय में दक्षेस की वास्तविकता जिससे अन्तर्राष्ट्रीय विश्लेषणकर्ता एवं चिन्तनकर्ता परिचित हैं। इस संगठन का सफरनामा पिछले तीन दशक को पार कर चुका है लेकिन फिर भी यह संगठन अन्य क्षेत्रीय संगठनों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी एवं सफल संगठन सिद्ध नहीं हो पाया है। अतः इसके संस्थापकों के उद्देश्यों एवं वर्तमान स्थिति का एक अवलोकन करना समीचीन है।

दक्षेस की स्थापना का श्रेय बांग्लादेश के तत्कालीन राष्ट्रपति जिया-उर-रहमान

==========

• सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं-341306 (राजस्थान)

को दिया जाता है, जिन्होंने लगभग 4-5 वर्षों तक इसकी स्थापना का प्रयास किया एवं अन्य पड़ौसी देशों को इस हेतु प्रेरित किया। इन्हीं के प्रयासों से पारस्परिक सहयोग एवं आपसी हितों को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया। 1977 से ही उन्होंने भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका जैसे देशों के राष्ट्राध्यक्षों से आपसी विचार-विमर्श कर प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए 1983 में नई दिल्ली (भारत) में विदेश-मंत्रियों की बैठक का आयोजन कर इस संगठन की रूपरेखा तैयार की। तत्पश्चात् दिसम्बर 1985 में विधिवत रूप से इसकी स्थापना कर दी गई। स्थापना के समय सभी सदस्य राष्ट्रों द्वारा आपसी आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक, सामाजिक सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई। संस्थापक राष्ट्रों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान एवं मालदीव थे। इस क्षेत्रीय सहयोग संगठन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये-

1. दक्षिण एशिया के लोगों के कल्याण में वृद्धि एवं उनके जीवन स्तर में सुधार लाना।
2. क्षेत्र में आर्थिक उपज, सामाजिक प्रगति एवं सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देना।
3. इस क्षेत्र के राष्ट्रों के मध्य सामूहिक आत्मनिर्भरता को मजबूत बनाना और विकसित करना।
4. आपसी विश्वास एवं समझ का विकास एवं एक-दूसरे की समस्याओं में सहायता करना।
5. अन्य विकासशील देशों के साथ सम्बन्ध मजबूत बनाना।
6. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त हितों के मामलों में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना।
7. समान लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सहयोग संगठनों को सहायता प्रदान करना।

इसके कुछ सिद्धान्तों का निर्धारण भी सदस्य देशों की आम सहमति द्वारा किया गया, यथा-

प्रथम, यह सहयोग सम्प्रभुता, समानता, क्षेत्रीय अखण्डता, राजनीतिक स्वतन्त्रता, आपसी लाभ तथा अन्य देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्तों पर आधारित होगा।

द्वितीय, यह सहयोग द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय न होकर पूरक होगा।

तृतीय, यह सहयोग द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय बाध्यताओं से प्रतिबन्धित नहीं होगा।

इस क्षेत्रीय सहयोग संगठन के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों का वर्णन करने के तत्पश्चात् इसके शिखर सम्मेलनों के लिए गये निर्णयों एवं उनके क्रियान्वयन का अवलोकन करके भी हम इसकी वास्तविकता का अंदाजा लगा सकते हैं। दक्षेस के चार्टर के भाग तीन में यह प्रावधान किया गया है कि प्रतिवर्ष इसके शिखर सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। इस प्रावधान की पालना शुरूआती दौर में ही हो पाई तत्पश्चात् शिखर सम्मेलनों में यह प्रतिबद्धता कायम नहीं रही। इस बात का प्रमाण 2016 से ही भारत-पाक की हठधर्मिता के चलते इसका 19वां शिखर सम्मेलन स्थगित ही चल रहा है। कारण यह माना जाता है कि पाकिस्तान द्वारा भारत में की जाने वाली सीमापार आतंकवादी घटनाएं एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को बदनाम करने की प्रवृत्ति के कारण भारत ने इस्लामाबाद में आयोजित होने वाले शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने से मना कर दिया था। भारत के

इस कदम का अन्य कई सदस्य देशों ने भी समर्थन करते हुए इस सम्मेलन में भाग लेने से मना कर दिया था। लेकिन फिर भी पिछले शिखर सम्मेलनों में लिये निर्णयों का अवलोकन करना आवश्यक है। नई दिल्ली (भारत) में आयोजित 8वें शिखर सम्मेलन में SAPTA (दक्षिण एशिया वरीयता व्यापार समझौता) को लागू करने पर सहमति प्रदान करना एवं आपसी व्यापार की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना इस समझौते का मुख्य लक्ष्य रखा गया। यह प्रयास दक्षिण एशिया में दक्षेस की उपलब्धि ही माना जा सकता है। इसके अलावा दक्षेस की सफलता का अगला चरण 1 जनवरी, 2006 से लागू किये गये SAPTA (दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र) समझौता माना जा सकता है। इस समझौते के माध्यम से दक्षिण एशिया क्षेत्र को ''मुक्त व्यापार क्षेत्र'' (Free Trade Area) बनाने पर सहमति प्रदान की गई। इसके अलावा दक्षिण एशिया विकास कोष की स्थापना, दक्षेस विश्वविद्यालय की स्थापना भी इस संगठन की सफलता एवं उपलब्धि मानी जा सकती है।

उपरोक्त उपलब्धियों का अवलोकन करें तो विश्व में कार्यरत अन्य क्षेत्रीय संगठनों की तुलना में इसकी सफलता का स्तर अपेक्षा त कमजोर ही नजर आ रहा है। यह संगठन अपने लक्ष्यों के साथ-साथ निर्धारित सिद्धान्तों से भी दूर होता जा रहा है। सदस्य देश आपसी एकजुटता, एकरूपता, पारस्परिक सहयोग के स्थान पर बिखराव एवं राजनीतिक मुद्दों को महत्त्वपूर्ण स्थान देने की नीति का परिचय दे रहे हैं। सदस्य देशों की यही भावना एवं प्रवृत्ति दक्षेस की सबसे बड़ी कमजोरी बनती जा रही है। संगठन की सहयोगी प्रवृत्ति में बाधा पहुंचाने वाली कुछ प्रवृत्तियों को निम्न रूप में बतलाया जा सकता है-

1. दक्षेस के सदस्य देशों में पारस्परिक सहयोग के स्थान पर अविश्वास की भावना बढ़ती जा रही है। आज सभी सदस्य राष्ट्र आपस में एकरूपता रखने की बजाय अन्य पड़ौसी राष्ट्रों के साथ अपनी नजदीकी रखते हैं। विशेष रूप से भारत-पाकिस्तान के सम्बन्धों में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है। आज पाकिस्तान भारत के साथ नजदीकी बढ़ाने की बजाय चीन के प्रति अपने सम्बन्धों में प्रगाढ़ता लाने की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर है। सदस्य राष्ट्रों की इस मनोवृत्ति के कारण दक्षेस की सहयोग की प्रक्रिया निःसंदेह बाधित हुई है।

2. सदस्य देशों द्वारा दक्षेस की बजाय अन्य क्षेत्रीय सहयोग संगठनों के प्रति झुकाव रखना भी अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर दक्षेस की कमजोरी एवं बिखराव का परिचय देता है। भारत दक्षेस के सदस्य देशों का नेतृत्व करने का सामर्थ्य रखता है लेकिन वह आसियान जैसे क्षेत्रीय सहयोग संगठन में ज्यादा रूचि दिखाता नजर आ रहा है। यह प्रवृत्ति एवं दृष्टिकोण भी दक्षेस की एकजुटता के लिए चुनौती मानी जा सकती है।

3. अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर एकरूपता का अभाव भी सदस्य देशों के प्रति अविश्वास ही पैदा करता है। इसके चलते दक्षेस के बिखराव की स्थिति साफ नजर आती है। इस कारण भी विश्व राजनीति में दक्षेस की प्रभावी भूमिका नहीं बन पा रही है। U.N.O. जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत-पाक का विरोधात्मक रवैया जगजाहिर है।

4. आतंकवाद की समस्या को भी दक्षेस की चुनौतियों में से एक गिना जा सकता है। इस कारण क्षेत्र का वातावरण अशांत एवं अराजक बना हुआ है। राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आतंकवादी गतिविधियों को एक हथियार के रूप में प्रयुक्तिकरण इस

क्षेत्र की समस्या बन गई है।

5. क्षेत्र में परिपक्व राजनीतिक नेतृत्व तथा राजनीतिक विकास के उच्च स्तर का अभाव भी दक्षेस के समक्ष एक चुनौती माना जा सकता है। क्षेत्र की राजनीतिक व्यवस्थाओं का विकास एवं राजनीतिक नेतृत्व का विकास विकसित देखों की तुलना में अपेक्षा त कम है। लोकतांत्रिक देशों में भ्रष्टाचार, जातिवाद, धर्म, क्षेत्रीयता आदि मुद्दे हावी होते नजर आ रहे हैं।

इन चुनौतियों एवं बाधाओं का अवलोकन करने पर दक्षिण एशियाई राजनीति के विश्लेषक एस.यू. कोडीकारा द्वारा बताई गई दो बाधाओं को भी सही सिद्ध माना जा सकता है।

- क्षेत्रीय सहयोग प्रभुत्वशील एवं निर्भरता के सम्बन्धों की धारणा पर आधारित नहीं हो सकता। भारत की स्थिति प्रभुत्वशील शक्ति के रूप में क्षेत्र में है। इसका वृहत क्षेत्रफल, तकनीकी विकास, वैज्ञानिक प्रगति के कारण छोटे पड़ौसी देशों में डर व अविश्वास की भावना रहती है।
- भारत-पाक सम्बन्ध क्षेत्रीय सहयोग की भावना को बाधित करते रहे हैं। दोनों ही देश कश्मीर-विवाद, कच्छ के रण आदि को लेकर टकराहटपूर्ण स्थिति में रहते हैं। अतः इस प्रकार की अस्थिर नीतियों के कारण सहयोग की भावना विकसित नहीं हो पा रही है।

संभावनाएँ

एक क्षेत्रीय आर्थिक संगठनके रूप में यद्यपि दक्षेस की असफलताओं के प्रस्तुतिकरण के बावजूद भी दक्षेस की उपादेयता किसी मायने में दक्षिण एशियाई क्षेत्र के लिए कम नहीं आंकी जा सकती। आज भी इस संगठन के माध्यम से दक्षिण एशियाई क्षेत्र को प्रगति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। असफलताओं के राख के ढेर में भी सफल संभावनाओं के अंगारे छुपे हुए रहते हैं। जिनके परिप्रेक्ष्य में दक्षेस के उज्ज्वल भविष्य को आंका जा सकता है। इस संगठन की विशिष्ट संभावनाओं का मुख्य रूप से निम्न प्रकार आंकलन किया जा सकता है-

प्रथम, दक्षिण एशिया में दक्षेस ही एकमात्र ऐसा विकल्प है जिससे क्षेत्रीय सहयोग की भावना को क्रियारूप दिया जा सकता है। इस क्षेत्र में सदस्य राष्ट्र आपसी द्विपक्षीय विवादों को गौण मानने की प्रतिबद्धता व्यक्त करें तो यह संगठन अपने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकता है। अतः इसकी सफलता की संभावना संभव हो सकती है। यदि सदस्य राष्ट्रों की मानसिकता द्विपक्षीय विवादों को गौण मानने तथा आपसी सहयोग को प्राथमिकता देने की बन जाये।

द्वितीय, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों एवं निर्णयों में यदि सदस्य राष्ट्र आपसी विवादों को गौण मानते हुए एकमत या एकराय का परिचय दें तो विश्वस्तर पर दक्षिण एशिया क्षेत्र की एक विशिष्ट पहचान एवं वजूद बन सकता है। विश्व स्तर पर भी दक्षिण एशिया की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में एकरूपता वैश्विक निर्णयों में भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है। यही वह मूल प्रवृत्ति है जो दक्षेस की दशा एवं दिशा दोनों में सकारात्मक बदलाव ला सकती है। अतः दक्षेस के माध्यम से अथवा दक्षेस के मंच की एकजुटता दक्षिण एशिया क्षेत्र की विशिष्टता को बनाने का माध्यम सिद्ध हो सकती है।

तृतीय,सांस्कृतिक एवं सामाजिक समरसता तथा ऐतिहासिक विरासत की दृष्टि से भी दक्षिण एशिया एकरूपता की स्थिति लिए हुए है, क्योंकि 1947 से पूर्व तो इस क्षेत्र के तीन राष्ट्र (भारत, पाकिस्तान व बांग्लादेश) तो एक ही राष्ट्र हिन्दुस्तान का स्वरूप लिए हुए थे। इसके अलावा नेपाल व भूटान भी हिन्दू बौद्ध धर्मावलम्बियों के राष्ट्र हैं। अर्थात् इस क्षेत्र को भारतीय उपमहाद्वीप का भी नाम दिया जाता है। अतः इस प्रकार की एकरूपता होने के कारण आपस में सहयोग, समन्वय तथा पारस्परिक सहभागिता की संभावनाओं में अभिवृद्धि की जा सकती है। अतः इस क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासतों की एकरूपता भी भावनात्मक लगाव बनाये रखने में सहायक मानी जा सकती है। यह प्रवृत्ति एवं संभावना भी दक्षेस को सफल संगठन के रूप में रूपान्तरित करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

चतुर्थ, सदस्य राष्ट्र आपस में व्यापार की प्रक्रिया को बढ़ावा देकर व्यापारिक लाभ को दूसरे देशों तक न पहुंचाकर सदस्य देशों में ही रख सकते हैं। यदि किसी वस्तु का उत्पादन किसी राष्ट्र में आवश्यकता से अधिक है तो उसे क्षेत्र के बाहरी राष्ट्रों को निर्यात न कर सदस्य देशों जिन्हें आवश्यकता है उन्हें निर्यात करने की नीति का सहारा लेकर लाभ बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा आयात करते समय भी सदस्य राष्ट्र क्षेत्र के राष्ट्रों से आयात कर व्यापारिक लाभ कमा सकते हैं। इस हेतु SAFTA की प्रतिबद्धताओं को क्रियान्वित किया जा सकता है।

निष्कर्ष-

दक्षेस 21वीं शताब्दी में अपनी पुरानी प्रवृत्तियों में बदलाव लाकर क्षेत्र की प्रगति एवं विकास में सहायक संगठन की भूमिका का निर्वाह कर सकता है। सदस्रू राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों में आर्थिक हित को सर्वोपरि माने तथा इस राष्ट्रीय हित की पूर्ति करने के लिए आपसी गतिरोध की भावना छोड़कर पारस्परिक आर्थिक हितों को पूरा करना अपना अंतिम लक्ष्य मानें। इस लक्ष्य की पूर्ति का दक्षेस को सर्वोच्च मंच एवं माध्यम स्वीकार कर विश्व पटल पर दक्षिण एशिया क्षेत्र की स्थिति एवं स्तर में सुधार ला सकते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि दक्षेस के सदस्य देश आपसी एकजुटता, सहयोग, पारस्परिक साझा समझ विकसित करने की नीति को बढ़ावा देने का कदम उठाये।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. एस.यू. कोडीकारा, ''साउथ एशियन रीजनल को-ऑपरेशन, इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज, हैदराबाद।
2. अहमन अबुल, सार्क : ए पर्सपैक्टिव, यूनिवर्सिटी प्रेस, ढाका।
3. उप्रेती बी.सी., सार्क : डाइनोमिक्स ऑफ रीजनल को-ऑपरेशन इन साउथ एशिया, वोल्यूम-I, साउथ एशिया स्टडी सेन्टर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
4. कौशिक, सुरेन्द्रनाथ, इण्डिया एण्ड साउथ एशिया, साउथ एशियन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
5. चौपड़ा, प्राण, यूचर ऑफ साउथ एशिया, मैकमिलन, नई दिल्ली।
6. पंत, पी. एण्ड जैन, पी., इण्डियाज फॉरिन पॉलिसिज : न्यू डाइमेन्शन, मिनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।